हिमाद्रि तुंग श्रृंग से कविता की सप्रसंग व्याख्या

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से

प्रबुद्ध शुद्ध भारती-

स्वयं प्रभा समुज्ज्वला

स्वतंत्रता पुकारती-

अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़ – प्रतिज्ञ सोच लो

प्रशस्त पुण्य पंथ है – बढ़े चलो बढ़े चलो

असंख्य कीर्ति – रश्मियाँ

विकीर्ण दिव्य दाह - सी

सपूत मातृभूमि के –

रुको न शूर साहसी

अराति सैन्य सिंधु में – सुवाड़वाग्नि – से जलो,

प्रवीर हो जयी बनो – बढ़े चलो बढ़े चलो

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियां जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध नाट्यकृति 'चंद्रगुप्त' के चतुर्थ अंक के छठे दृश्य से ली गई हैं।

प्रसंग – चंद्रगुप्त नाटक में अनेक गीतों का समावेश किया गया है। 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' गीत चंद्रगुप्त नाटक के चतुर्थ अंक के छठे दृश्य में संकलित है। 'चंद्रगुप्त' नाटक में जयशंकर प्रसाद ने चंद्रगुप्त द्वारा स्थापित साम्राज्य को चाणक्य के मुख से 'मगध' साम्राज्य न कहलाकर 'आर्य साम्राज्य' कहलवाया है। कवि नाटककार जयशंकर प्रसाद ने इसी आर्य साम्राज्य की परिकल्पना 'अलका' नामक चरित्र के माध्यम से उद्घाटित करवाया है। अलका इसी आर्य साम्राज्य की परिकल्पना को गीत के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। नागरिकों के साथ मिलकर गीत गाती हुई अलका आर्य साम्राज्य की परिकल्पना को प्रस्तावित करती है और आजादी का आह्वान करती है।

- व्याख्या – जयशंकर प्रसाद का यह गीत एक तरफ चंद्रगुप्त नाटक का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है तो दूसरी तरफ यह स्वतंत्र कविता और स्वतंत्र गीत के रूप में भी बहुत अधिक पसंद किया जाता रहा है। जयशंकर प्रसाद की एक खास विशेषता है कि उन्होंने इतिहास का उपयोग अपनी समसामयिक चुनौतियों को उभारने के लिए किया है। चंद्रगुप्त / चाणक्य युगीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उपयोग अवश्य किया है जयशंकर प्रसाद ने परंतु इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के माध्यम से जयशंकर प्रसाद स्वाधीनता आंदोलन को इस गीत के माध्यम से जीवंत कर रहे हैं। प्रसाद हिंदी साहित्य के आधुनिक युग के रचनाकार हैं, वे भारत की आज़ादी के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत की जनता हिमालय के उच्च शिखरों से स्वतंत्रता का आह्वान कर रही है। ऐसा आह्वान जो कि स्वतःस्फूर्त, स्वालोकित और प्रबुद्ध है। भारतीय जनता अपनी पूर्ण क्षमता के साथ उठ खड़ी हुई है। इस गीत में कवि ने स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनमानस के चेतनासम्पन्न आह्वान को देश की आज़ादी के लिए शुभ माना है। आज़ादी की राह को उन्होंने पुण्य और प्रशस्त पंथ कहा है। राह की अनंत कठिनाइयों के रहते हुए भी भारत माँ के शूर – सपूत नहीं रुकते हैं। शत्रु के समुद्र रूपी सेना में बड़वाग्नि के समान जलने और विजय को सुनिश्चित करते हुए जयशंकर प्रसाद ने आगे बढ़ते जाने का संदेश दिया है।

  विशेष –

  भावपक्ष –

1.देशप्रेम की भावना व्यक्त हुई है।

2. हिमालय के उच्च शिखर से आह्वान एक संकेत है अर्थात यह आह्वान भारत के एक एक व्यक्ति को सुनाई देगा।

शिल्प पक्ष –

रूपक अलंकार, उपमा अलंकार, अनुप्रास अलंकार आदि।

भाषा सरल – सहज, प्रवाहपूर्ण और तत्सम युक्त है।